

## आइ भोर

□

डा० श्री गंगेश गुंजन

पात्र :

युवक

मंचक व्यक्ति

किशोरी

रमेश

नीरा

अमर

छारिगोट अन्य व्यक्ति

□

## पहिल दृश्य

(एकटा साधारण पार्क ! चैंच-सत गोटे हाफी क' रहल छथि-अईटा मोड़ क' रहल छथि । क्यो-क्यो मुँह बाधिक' चुटकी बाज रहल छथि । दू-तीन टा बेंच रहलाक कारण ओहिपर क्यो बैसल नहि छैक ।

पैंतीस-सैंतीस बर्षक एकटा युवक, जे चिन्तित अछि आ ओकर स्वास्थ्य साधारण छैक, अपन कमीजक हाथकेँ ऊपर मोड़ैत मंचपर पाकमे अवैत अछि । ओकर बन्ना हाथमे एकटा झोरी लटकल छैक । ओ सभ लोककेँ अनचिन्हार जकाँ देखैत अछि । फेर एकटा बेंचपर बैसि क' कोनो दिस देख' लगैत अछि । किछुए छनमे उठिक' दोसर दिस बड़ि जाइत अछि । फेर छुरिक' ओहि बेंचपर पदर ऊपर क' बैसि जाइछ जे अपेक्षकृत दर्शकलोकनिक लग पड़ैत छैक । हाफी करैत अछि । जेवो हथोड़ैत अछि । चेष्टासँ बुझाईत छैक ओ सिक्करैत ताकि रहल अछि । नहि छैक सिकरैत । ओ निगस भ' क' फात महक लोकमे एक गोटेपर, फेर सग गोटेपर, अपेक्षासँ ओछि घुमैत अछि । एक ओछा रहल अछि । तकरा देखिक' ओ व्यंग्यसँ बिहूँस' लगैत अछि । फेर अनेरो उदास भ' जाइत अछि, मभलासँ । उठिक' जहिया लग आव' चाहैत अछि कि दू गोटे भय वा सन्देहसँ सिटपिया-जकाँ जाइत छैक ओकरा देखिक' । ओ तहिपर बिहूँसैत अछि आ अपन बेंचपर घुरि, आबिक' वसि जाइत अछि चिन्तित भावें-पदर पसारि क' । फेर जेवो तफैत अछि आ एकटा मोचरल कागजक टुकड़ा बाहर करैत अछि । सोझ क' क' ध्यानसँ पढ़वाक यत्न करैत अछि । ओकर ओछिमे बड़ प्रिय चक्रमकी छैक । प्रकाश, ओकर अनेक झुकल आकृति पर सेहन क्रमसँ पड़ि रहल छैक जे ओकर ओछिमे ओ चमक दर्शकसभ देखि दैत छैक । ओ ओकरा पढ़ैत काल उद्दिग्ध जकाँ भ' जाइत अछि । ओकर आकृति भिन्ना जाइत छैक । ओ मुट्ठीमे पुर्ण लेने पहिने लगक लोकसभ दिस, फेर दर्शक दिस दूर-दूर धरि देख' चाहैत अछि । ओकर ओछि असहाय जकाँ लगैत छैक । दुनू हाथकेँ कब्जा लग तेना भ' क' एँटिक' पेटक नीचाँ झुला तैत अछि जे ओकर विचाराकेँ आर

देखार क' दैत छैक । ओ शान्त उत्तेजित स्वरें दर्शककेँ सम्बोधित करैत अछि । पृष्ठभूमिसँ कोनो समारोहबला साउंडस्पीकरपर उल्लासक गीत बाजि रहल अछि । अकस्माते दर्शककेँ सम्बोधित करैत अछि ।)

युवक- अहाँ सोचि सकैत छी, हमर हाथक एहि पुर्जामे की लिखल भ' सकैत अछि ? अहाँ नहि सोचि सकैत छी । (क्षणिक चुप्पी) अहाँ कहि सकैत छी, अपन देशक सम्पूर्ण आबादी केँक हिस्सामे बाँटल अछि ? (क्षणिक चुप्पी) मुदा अहाँ एहि बँटबाराक बात सेहो नहि कहि सकैत छी ?

(ओकरा एना भ' क' जोरसँ बजबापर झुकि रहल लोक ओकरा बताह बुझैत अशंकाके तन्त्रा तोड़ि सजग भ' जाइत अछि । मंचपरक लोक सभमेसँ तेनटा ओकरा ध्यान द' क' देख' लगैत छैक । ओहीमेसँ एकटा बड़बड़ाक' पूछ' लगैत छैक)

दोसर पुरुष-अहाँ ककरा कहि रहल छिएक ? हमरा ?

(युवक ओकरा नहि सुनैत छैक, कहिते रहैत छैक ।)

युवक- अपने देशक सम्पूर्ण आबादी दू हिस्सामे बाँटल अछि । सेटी आ कवितामे । (चुप्पी भ' जाइत अछि । फेर तुरन्त कहैछ) अहाँ उदास भ' गेसहुँ ? सेटीक बातपर कि कविताक बातपर ? (दर्शकसभूह दिस देखैत । हाथक स्थिति पूर्ववत् छैक । ओकर ठाढ़ होयबाक ओहि ढंगसँ बुझाईत छैक जेना ओ माटिमे गड़ल एकटा लथ-बन्हावल मूर्त हो । लगक लोक एकरा लग अवयाक इच्छा राखितो लगमे अवैत नहि छैक । पार्कमे पड़ल लोकसभमेसँ एकटा माय तरमे पोथी जकाँ किछु दवाक' पड़ल रहैक जे उठिक' ठाढ़ भ' गेलैक । युवकक लगमे, तथापि ओ अवैत छैक । बगलमे ठाढ़ भ' जाइत छैक । ओ ओकरा बुझैत छैक)

तेसर लोक-अहाँ ककरा कहि रहल छिएक ? के अछि ओहि दिस ? अहाँ हमरालोकनिकेँ किएक नहि कहि रहल छी ?

युवक- (ओकरा व्यंग्यसँ देखैत) अहाँ किएक नहि बुझैत छी जे अहाँ केँ कहि रहल छी ? अहाँकेँ अपना सोझाँमे किछु नहि देखाय पड़ि रहल अछि । आगोँ दिसक' झुकल बैसल ओ अँध, ओहि दिस एकटा पूरा परिवार, नहि देखाइ पड़ैए अहाँकेँ ?



तेसर आदमी—अहाँ प्रचण्ड लगेत छी भाइ साहेब ! क्षमा करय । (ओ समरि जाइत अछि अपन स्थान दिस । युवकमे एकर किछु प्रतिक्रिया नहि होइत छैक । परंथ फेर तुरन्त जाइत ओहि व्यक्ति केँ खिसिया जकाँ दैत अछि)

युवक—सुनू । अहाँकेँ सत्ते किछु नहि देखाइए ? किछु नहि ? विविध बात अछि । अहाँक जेबोमे कौनो पुर्जा नहि अछि ? आ कि अहाँ तकरा विसरि केँ 'प्रकृतिक आनन्द' दटा रहल छी ? (व्यंग्यसँ ओ व्यक्ति ओकर आश्चर्य आ डरसँ देखैत चल जाइत छैक । युवक किछु नहि कहैत छैक, यात्र भासनाक ओखप देखैत छैक )

युवक—हम अहाँकेँ आदमीक मनक भूगोल बुझा रहल छी । (प्रस्ताव करबाक मुद्रामे मग्नतासँ) बेस, ई कहू जे अहाँ हमरा आन तँ नहि बूझि रहल छी ? अपन बूझिक' हमर बात सुनि रहल छी नै ? जेना एखन जे, हम अहाँकेँ कहि रहल छी तकरा बकवाद तरहक गण्य नहि नै मानि रहल छी ? ई बात एहि दुआरे पछि रहल छी जे अहाँसँ हमरा भेंट भ' गेल अछि । (क्षण भरि चुप) बर्नियसँ हमर भेंट नहि भ' सकल । ओ गेल अछि कतहु भाल-उठय' । नाकर कहलक ।

[बड़ सूक्ष्म स्तरपर किराना दोकानक ध्वनि-प्रभाव, जेना युवक अनुभव क' रहल हो, तेहन सन बुझाइ पड़ैछ]

युवक—जखन हम डेरासँ चलल रहौ तँ पत्नी चूल्ह पगब' बैसल छसीह । (हँसी) हुनका भरोस छलनि जे हम आधा घंटा मे घुरि क' पहुँच जायब डेरा । हम जनैत छिएक । (क्षण भरि सोचैत चुप्पी) एखन ओ गरम त'बकेँ चूल्हपरसँ उतारिक' मोटिपर धरैत होयतीह आ भरल बर्तन फनि चूल्हपर थढ़बैत होयतीह । फेर ओकरा उतारिक' पझाहल आ रहल चूल्हकेँ देखि रहल होयतीह । क्रोध आ लाचारीमे हमरापर खींछा रहल होयतह (अन्दगनस्क जकाँ होइत) एक टा तँ छोटकी अछि । ओकरा हम बड़ स्नेह करैत छिएक । पत्नी भोरे-भोरे ओकरा दू चाट मारलथिन । (आकृति किंचित तनि जाइत छैक) हमरा बड़ क्रोध उठल । ओकरा बड़ जोड़ भूख लागल रहैक, ओ दूक बदला चारि टा रोटी भडलकनि । आब अहाँ लग रोटी नहि अछि ताहि लेल उत्तरदायी ओ अछि वेंचरी बालबांध ?

आ, यदि अहाँ माय छी तँ अहाँक जिम्मा रहबैक चाही रोटी । यदि रोटी नहि अछि तँ अहाँ माय कोना भ' सकैत छी ?

(लगबला लोकसभ चुटकी बजा-बजाक' हाफी करैत अछि । पार्क शहर मध्यमे छैक, कतहु तँ पल्लभूमिसँ ट्राफिकक स्वर । युवककेँ देना फेर किछु गान पढ़ि जाइक । कह' लगैत छैक)

युवक—हम लिखैत रही कविता । अहाँकेँ आश्चर्य होयत । हम स्वतंत्रताक राजत-जबन्तपर कविता बना रहल छलहुँ । एकटा कवि सम्मेलनमे जयवाक रहय ।

वाड़ी आय बाड़ी भेल अछि

ओड़हूलक गल उगि आयल अछि

हमरा दरबानापर लाल सूर्य ठाढ़ भेल अछि ।

हरियरीक पावल जंगल लतरि गेल अछि

आ फूल-फड़क सिससिला

घरे-घर पहुँचल अछि अनाजक ढेरो....

[एक क्षण चुप रहिक' फेर पुर्जा देखबैत बाज' लगैत अछि ।]

युवक—ई जे हमर हाथमे पुर्जा अछि ताहिपर इहए कविता छैक । तखने छोटकीकेँ पिटैया भ' गेलैक.... (दैनन्दिनक किछु घरीआ गारि-शाप 'मरियो ने जाइत अछि' 'अभगलो' आदि ध्वनि तथा धापड़ मारबाक स्वर ऊँच स्तरपर । ओकर आकृतिक भावसँ लगैछ जेना ओ फेर ओही मनःस्थितिसँ गुजरि रहल अछि, कोनो पार्कमे नहि, अपितु अपने असोरापर हो । ध्वनि आवय खतम)

युवक—हमरा क्रोध आवि गेल । बन्द करलहुँ कविता (क्रोधने) आ जोरसँ ईटलियनि पत्नीकेँ । मारबाक इच्छा भेल । मुदा आइ-कालिह हुनका बोखार लागल छनि । मात्सर्य भ' गेल । पीयि गेलहुँ क्रोध केँ (परजित जकाँ) कहलियनि—'कहू, कौ सभवस्तु-जत चाही ? लिखाउ फिरिस्त । देखिए दोकान जाक' । सैह फिरिस्त अछि । (हँसैत किंचित) कविता आ फिरिस्त । तेना भ' क' लिखकछैक जे पड़' लागी लगातार तँ लागल जेना ई फिरिस्तक कविता थोक—

“वाड़ी आय बाड़ी भेल अछि

ओड़हूलक गल उगि आयल अछि



हमरा दरवाजापर लाल सूर्य ठाढ़ भेल अछि ।  
हरिघरीक पाकल जंगल लतरि गेल अछि  
आ फूल-फड़क अन्तहीन सिलसिला  
घर-घर पहुँचल अछि अनजक डेरी...  
गहम पन्द्रह किलो  
चाउर डेढ़ किलो  
हरिद पवास ग्राम (नहि एखन एकरा काटि दिऐक)  
नोन एक किलो ।  
मसल्ला सभ किछु मिलाक'  
अढ़ाई सय ग्राम ।  
नै नै एकरा एखन काटिए दिऐक !  
आ तेल दू कन्मा । यस''

(युवक चुप भ' जाइत अछि । फेर बाज' लगैत अछि)

गाथाक अन्त छैक । अगिला मसक दरमाहा भेटत तँ पूरा महोनाक  
आश्रमी वस्तु-जात आवि जायत । आ फेर उधारीक मामिला अछि।  
बनियापर निर्भर छैक । देअय, नहि देअय । अपन हाथ ? जेना  
एखन ओ माल उटत्र' गेल अछि । हम ओकरा प्रयोजनमे एत'  
पार्कमे बैसल छी । जानि नहि कखन घूरत । ओकरा तँ गरिअथवाक  
इच्छा होइत अछि । परंच डर होइ-ए ! अहाँकेँ विश्वास नहि  
होयत । (जेना कोनो रहस्यक बात बुझ रहल हो ताहि मुशरमे)  
ओकर इष्ट-अपेक्षित सर-सम्बन्धीक सभ पार्कमे, रानिमाभे, स्टेसनबल  
महावीर-मन्दिरमे, गंगाकाल, सभ ठाम रहैत छैक । बैसल ।  
(कहैत-कहैत ओ व्याकुल जकाँ भ' उठैत अछि । बगलबलाकेँ  
देखैत छैक) "ओना, बजै-ए कतेक भइजी" ।

तेसर लोक-आठ । (ओ उदास हँसो हँसैत अछि । फेर कह' लगैत छैक) ।

युवक- हम जनैत रहिऐक । जनैत रहिऐक ई बात । देख' चाहितय तँ ई  
एहन जरुरी वस्तु-जात ओकर मैनेजर नहि र' सकैत छलय ? ओ  
कि कोनो नहि चोन्हैत अछि हमरा से ओकरे दोकानसँ उधारी खाइत  
छिऐक ? फूमिअ मालिकक लथ, जे मालिक नहि छथि । (विवशपूर्ण  
आकृति भ' जाइत छैक ओकर) एतना स्थितिमे इन की करितिएक ?

हम एत एहि ठाम नहि आविक' बैसि जइतहुँ अहाँसँ नहि गम्य  
करितहुँ आ अपन दुख नहि सुनबितहुँ तँ की करितहुँ ? (क्षण भरि  
चुप) आ हम अहाँकेँ सत्य कहैत छी । हम वास्त धरि एत' रहब  
जावत धरि तौनू नेनासभ जेना-नेना हमर आशावादी तर्कत, कनेत-चुप  
होइत, सुति नहि रहय, आ हमरा स्वीक तामस ज्वरने नहि दबि  
जइनि । तकर अन्दाज हमरा अछि । हम एतहि बैसल-बैसल बुझल  
बुझि जयबै पूरा । हमहीँ की, अहूँ बुझैत होयबै । ओ, अहाँमे आ  
हमरामे भिन्नते की अछि ? मात्र एतबै तँ फेक अछि-अहाँक घरमे  
गहम पहुँचि चुकल अछि आ हमरा घरमे पहुँच' बल अछि ।  
अहाँक पत्नीसँ अहाँकेँ दोसर तरहक लड़ाइ होइ अछि, हमर दोसर  
तरहक । अहाँ अपन बच्चा-सभकेँ ओ वस्तुसभ द' लैत छी जे  
हमरा अपन बच्चासभकेँ देब बाँकी अछि । (फेर जेना किछु  
सोचिक') ओना हम तुलना नहि क' रहल छी । तुलना की करू ?  
जान अगुता गेल । आइ रवियो छैक । दोकानो आठे बजे बन्न भ'  
जाइत छैक । (किचकिचाक' जेना) को-को नियमसभ छैक ।  
जोबाक हेतु गुंजाइश तँ सुइक सोक भरि आ प्रतिबन्ध पूरा-पूरा एक  
समुद्र भरि ।

मंच परक क्यो एक टा हड़बड़ावल सन क्रमे बजैछ-“अरे-अरे, हमरा  
कते आवश्यक वस्तु-जान किनबक छलय । तरकारी...। हम तँ  
बिसरि गेलिऐक । (किछु क्षण चुप रहैत, नापरवाहीसँ) जाय वैत ।

युवक- बेस अहाँकेँ नहि लगैत अछि एहन ।

सभ स्वर-को \$\$\$ ? (कोनो जिज्ञासाक, कोनो खिसिआयल, ककरो  
आदर्शक, ककरो झोथिल आ ककरो डेराचल स्वर)

युवक- बहुत प्रतिबन्ध अछि हमरालोकनिक ऊपरमे ? हमरालोकनिक एकराँ  
एक सुन्दर इच्छापर, हमरा सोचबा तथा कारवापर, मुँहपर, हाथपर,  
आ मस्तिष्कपर । अहाँकेँ नहि बुझाइत अछि ? (ओ बड़ उद्विग्न भ'  
उठैत अछि आ जेना एक्के स्थानपर बड़ बंचल भ' जाइत अछि ।  
फेर करीब-करीब सभक उपस्थितिकेँ बिसरिअ' एक दिस देखैत  
अछि)

दोसर लोक-अहाँक माथ बड़ ओझरायल आ ज्यर अछि । (ई संवाद ओ  
बड़ सुभ्यस्त भावै बजैत मुँह-फाड़ हाथो लैत छैक । फेर अँगा



कहैत छैक) अहाँ घर जात आ खा-पी क' सुति रहू ग' । चिन भ' जायत तँ नीकें भ' जायत ।

[युवक धधकैत आखिचें देखैत छैक ओकरा, ओहि हमदर्दकेँ । मुदा, ओकरा किछु करैत नहि छैक । ओ सहमि जाइत छैक ।]

**युवक-** उपदेशक हेतु धन्यवाद । (भ' हूँ पर जोर दैत) मुदा, अहाँ हमर बातसँ ई सोचैत होइ जे किछु अधलाह का जकरा अहाँ लोकनि सामाजिक भाषामे कहैत छिएक बसहपनीयता उन्मादी बात, से नहि धिक । हम से नहि छी । (चुप, फेर एकटा धक्कीक सङ्ग) अपितु हमहुँ अहाँ जकाँ कविता आ रोटीक बीचक समुद्र हेलि रहत छी । थाकि रहल छी तैयो लगातार हेलि रहल छी । (छी-साँ अक्षर बाजल जा सकय ततक क्षणक चुप्पी) हमर स्रो कहैत छथिन हेलनिहारक लेल समुद्र बड़ छोटा होइत छैक । आ सेहो, हम अहाँ सङ्गे छी । अहाँक ई नेनाभुटका सभ अछि । चिन्ता कथोक ? बड़कू तँ पाँच-दस वर्षमे तैयार भ' जायत....(टुटैत स्वर) 'मुदा, मैह तँ छैक । हम ओकरा कहि नहि सकैत छिएक । हम समुद्रो ईशू आ कन्हा परसँ इहाँसभ उठारल से कतेंक भयावह बात छैक ? (हताश स्वरें) राज लागल घोड़ा जकाँ चार लेब-पानि पीचब.....। (क्षण भरि चुप्पी) कहन कठिन अछि जे आइयो अपना बीचक ई अन्तर पानि नहि पवैत छी । जत' हमर मन अछि आ हमर संसार । हम जनैत छी, वैह संसार बहुतो लोकक छैक । मुदा तैयो कतेंक दूरी छैक ? ई दूरी प्रतिदिन बढ़ल जा रहल अछि । जेना सभ दिन आयु घटैत जा रहल अछि ।

**मंचक** कोनो एक व्यक्ति-क' कहैत छैक उमर घटि रहल छैक ? आव तँ औसत आयु बेस जोरसँ बढ़ि रहल अछि । आँकड़ा छह वृजल ? कहियो अखबारो पढ़ैत छह ? रेडियो सुनैत छह ? (सगर्व चुप भ' जाइत अछि)

**युवक-**अहाँ अधलाह मानि गेलहुँ भाइ ! नहि । एहि दुआरे नहि कहलाह । हम तँ.....अपन समस्यामे अहाँकेँ संग बृझिक' ई बात कहलाह । अहाँ चाही तँ हमरा डाँटि सकैत छी । हम सहि लेब । फाइलमे गलत क्रमसँ एक्को बेर चिट्ठी लगा देलापर बाँस हमरा डाँटि दैत अछि । हम ओकरा कहैत छिएक जे हमरासँ ई काज नहि होइत

अछि तँ हुरपटि दैत अछि । घृणसँ स्वाहा क' देव'वला ओहिधरसँ हमरा देखैए । आ, सप्ताहमे तीन बेर मेमो देवाक धनको धोकरैए । ओकर तागति चलै तँ ओ हमरा ओहीक्षण नोकरीसँ निकाल बाहर क' देअय । ओही क्षण । परंच हमरा लागैए जे ओहो बेचारा बड़ प्रतिबन्धमे अछि । (क्षण भरि चुप रहिक') लोकसभ कहैत अछि हमरा-तौँ स्थायी सरकारी नोकर छह । ककरो बापक दिन नहि छैक जे बिना कोनो जवदस्त कारणकेँ क्यो तौरा नोकरोसँ निकालि देतह । हम यदि एहन एक टा कारण चाहितो छी तँ बना नहि पवैत छी । कारणो कि तुरन्त बनि पवैत छैक ?

**क्यो एक व्यक्ति-**(जेना मच्छड़ मारैत) मरतब ? कथोक कारण ?

**युवक-**(धनमन जकाँ) हमरा यदि नोकरोसँ निकल' बड़य तँ हमरा पत्नी केँ ई शिकाइत नहि भ' सकतनि जे हम ठीकसँ घरक इन्तिजाम नहि क' पवैत छी । बच्चासभकेँ, अपना आ हुनका नोक जकाँ खोआ नहि पवैत छी । शिकाइत कोना रहतनि ? जखन हम कमयबे नहि करब तँ खोअचबनि कोना ? आ तखन ककरो हमरापर आश्रित रहबाक अधिकार कोना रहतैक ?

**मंचपरक क्यो व्यक्ति-**सं ठीकें कहैत छह । पुरतकसभमे लिखल-छपल अधिकार आ सत्तेक भेटल अधिकारमे धरतो-आकाशक फर्क होइत छैक । (युवक ओहि व्यक्तिकेँ प्रशंसाक दृष्टिसँ देखैत छैक । व्यक्ति चुप भ' जाइछ)

**युवक-**एम्हर सुनैत छी जे खेतसभमे जे फसिल क' क' उपजवैत छथि, बटैदारक रूपमे आय सरकात हुनकोलोकनिकें ओहि जमीनक अधि कार द' क' मालिक बना देलकनिहें । आय ओएह किसानलोकनि ओकर मालिक छथि । जांतधु-कांडधु । अन उपजाबधु आ खाधु पियधु । मौजसँ रहधु । मुदा सरकार को अखबार आ कि रेडियो कि सभासोसाइटीमे एहि अधिकारक प्रचार होइत रहलाक बादो, आइयो कि सभ बटैदार, बटैदारे मात्रे नहि छथि, बंधर बेजमीन भूखल आ मुँह तकैत ? (ओ जेना दर्शकसँ पुछि रहल छी, तहिना ओहि दिस देखैत । क्षणिक चुप्पी ।)

(मंचक एक व्यक्ति लगातार खोंखी कर' लागैत छैक, युवक एक बेर देखिक' ओकरासँ बजैत अछि)



युवक-आ कि कार्यालयके लिये मे ! सभ कर्मचारी सरकारक छैक अथवा प्रइवेंट लिमिटेड । समान । खाली उत्तरदायित्वसँ भिन्न । सभसँ जीवन-यापन आ अनुशासनक समान अधिकार । परंच, छोटछिन किरानी बर्गक लोक कि दस बजेक स्थानपर एगारह बजे अवस्यपर बिना अपना हंडक 'जवाब' देने अपन कुर्सीपर जाक' बस सकैत अछि ? ओकरा बस' देल जयनेक ? जखन कि अहूँके वृद्धल अछि, कार्यालयक हंडक चंगर घण्टा भरिका बाद खुजैत छैक, पहिने बन्द चे' जाइत छैक कि नहि ? अधिकार आ अनुशासनक नामपर कौ ओकरासँ किछु पूछि सकैत छैक ?

एक व्यक्ति अप्रत्याशित-अहूँक बस आदर्श बस अछि को ? ओहो चरित्र आ समय वा देशभक्तिक महत्वपर नित्य मोटिंग करैत अछि को ? (युवक मात्र सहमतिक दृष्टिये ओहि व्यक्तिके देखैत छैक)

युवक-ओकरासँ क्यो नहि पूछि सकैत छैक । जखन कि ओ सभसँ पूछि सकैत अछि । ओ कहैत छैक जे ओ एही बातक लेल एत' ब्रेमओल गेल अछि । एकरा ओ एडमिनिस्ट्रेशन' माने प्रशासन कहैत छैक । (व्यंग्य) प्रबन्धक नामपर ओ मनमना तन्त्र चलबैत अछि । ओ प्रशासन-तन्त्रक नामपर महत्तल्लोकिनि कि तँ कोल्हुक बहद बनल निबर्हत छथि, कि भाइके छथि पाँच लगाओल जा रहल बच्चा जकाँ आ पढ़ाईत छथि । मुदा, पढ़ाई-ए के एहि बेकारो आर बढ़िते जा रहल नित्य-नित्यक महनीक युगमे ? ओ लोकनि प्रोक्षमे फदर-फदर फ' क' बसिक मात्र-बहिनकेँ गारि दैत छथिन आ संझामे सलाम ठोकेत छथिन ! फेर संस्थानक साहित्यिक परामर्शदाताक ओहदापर सुशोभित रहैत छथि वा प्रमुख अभियन्ताक पदपर ।

दोसर लोक-(क्रोध तथा तर्जनीसँ) अहाँ तँ विचित्र छी ओ । जानि नहि, कत सँ टपाकि अयलहुँ । तखन उन्मादमे बकैत जा रहल छी । भाषमे को अछि से किछु पते नै चलेए । (एक भेकेंड चुप रहिक' जेना ओकरा चुनौती दैत) अहाँके अछि पता, की-की बाजि रहल छी अहाँ ? आ ताहि बातसभक मतलब की छैक ? आ क' सुनि रहल अछि ? (किछु बेसी अपर-प्रॉन भ' क') धिक्कार अछि । घर सँ बाहर धरि लोक पछौ पड़ल रहैत अछि । एत' आयल रहै

अफिससँ जे किछु जाल मुस्तायब तखन जायब घरमे जर' । विचित्र समय अछि । मनुष्यक कंठहु शान्ति नहि । मे घर, मे दफ्तर मे पाक' । (हाफो छोड़ते बजैत अछि) चलू भाइ । भगवान बाहरानि तँ अहाँ अतिशीघ्र बतह भ' क' फेश फहरबैत रुइकसभपर बौआयल फिरव । (ओ एक ठामसँ दोसर ठाम जाय लगैत अछि)

युवक-हमरा अफसोच अछि । भाइ साहेब (व्यंग्य आ अन्तर्निश्चयसँ) हमरा भारी अफसोच अछि । हम अहाँक भगवानक इच्छासँ बाहरक लोक भ' गेलहुँ अछि । अहाँक भगवानक इच्छासँ तँ हमरा पाँच-सात वर्ष पहिने बगह भ' क' सड़कपर आबि जयबाक चाहैत छल । किएक तँ हमरा गस्तिक्कमे एक टा बड़ महान कविता छल आ एक आदर्श लोक छल जाहिमे एखन ओ पहिल लोक आव' बल रहल, एहि पृथ्वी भरिक ओ पहिल लोक, जे कवित अ टोटिक बीचक समुद्र सांखि लेब' बला छल । ओ चिक्कन-चुनमुन छायादार सड़क जड़ितव जाहिपर निर्विघ्न लोक अपन-अपन इच्छाक गन्तव्य दिस जैतय (जेना स्वप्नमे होइत) मुदा, ओ पहिल लोक अपन गस्तिक्क, ओहि महान कविताक नावपर कनिचो दूर नाहि रहि सकल । दहा गेल । पहिल बेर माय-बापक भनसाधारक मित्रायल चूल्हिक जाहिमे, ओ दोसर बेर सामाजिकता, खासकर नामपर, एक नूआ, नव विवाहितक भनोरधसभक रहल आँतरक लहरिपर । पाँच सात वर्ष पहिने...

एक व्यक्ति-(बड़ इतिहासज्ञ होचबक गम्भीर मुद्रामे) हँ, देशपर आक्रमण जे भेल रहल पाकिस्तानक ? ओह ! भयानक छल...

युवक-(ओहि व्यक्तिके उपेक्षासँ टारैत) तँओ अपर्याप्त बूढ़ बाप जकाँ नेनासभक चिन्ता-फिकर करैत छी 'फल्ला खयलक ? 'फल्ला खाक' सुतल अछि कि ओहिना सृति रहल ? आ कि फल्ला लाग्यो क' क' सुतल अछि कि नहि ? पंगो ओछाअनमे करत ।' (एक क्षण चुप्पी विवशतासँ) एही छोट-छोट पारिवारिक चिन्तासभमे मस्तिष्क दबायल अछि । कविता छटपटाइत आत्मा जखन बहुत दिन धरि रोगी शरीरमे जेबैत रहल, फेर नहुएँ-नहुएँ मर' लागल । (चुप होइत) हमरा मनमे हमर कविता मरैत रहल आ टीक हमरा सोचमे हमर सन्तानक रोगी ठट्टी जैर खट्टामे सटैत गेल । सोझाँ-सोझी ।



एही दरपर सात-आठ वर्षक जीवन । (ई संवाद इलाहाबाद के लीजें सामान्य होइछ, फेर क्षणिक अन्तराल । उपस्थित लोकमेंसे गोटेक आँखि क्षण भरिक लेल सहानुभूतिपूर्ण भ' क' अन्यननरक भ' जाइत छैक) ।

अहाँ हनर बन्धु छी, हम को कहू ? जीवनक अर्थ हमरा हेतु कोना जनमाहु रोगीक मृत्युवाक एकटा जर्जर । चौकी भरि अछि-एक टा काठक तख्ती भरि । जाहिपर चिरं गेगी पड़ल अछि । सैह तख्ती धिक जीवन । जीवन आव कोना नहि, एकटा रोगशय्या अछि ।

तेसरलोक- (खींशी तथा उन्नेजनासे) बड़ विचित्र बात अछि । की कविता आ तख्ताकें रहि रहल छह छी ? जाह-जाह, धर जाह । गानपारस स्त्री आ बच्चासभ बाट नहि तकैत होततह ? घर जाह । (क्षणिक चुपगीक बाद) विचित्र लोकसभ अछि एहि संसारमें । हम तैं बातो नहि बुझि पयैत छिएक । को धिनु-आधारक बात सभ छै ? पड़ल-लिखल विनु माधक बात । (भर्त्सनाक आँखिमें ओकरा गुरइ क' देखैत) अहाँ चाहितहुँ तैं ओत ओहि दुहा बँचपर विगलमान भ सकैत छलहुँ (बैच दिस आइर देखैत) गुदा जानि-बुझि क' कृत्रिम क' हमरो अशान्त करवाक लेल एतहि जमल रहलहुँ आ अपन प्रलाप करैत रहलहुँ (कटु होइत अहाँ बड़ दोषी स्वभावक छी औ, जरनिचाह लोक ! अहाँके अपन पड़ोसीक चीन देखल नहि जाइ-ए ।

युवक- (हँस' लगैछ) पड़ोसी ? अहाँ किनकर गण्य कहैत छी ? रामचन्द्र बाबूक गप्प अरे (ओ तैं बेचारा 'अजीब' अभागल अछि । अहाँ जगैत छी ?) जीवनमें ओकर को सभ उद्देश्य छलैक ? ओ की बन चाहैत छल ? आ बन, चाहैत को छल, हम ओकरा खूब लगसँ चीन्हैत छिएक जे ओ केहन प्रतिभाशाली रहब । ओ अपन इच्छाक प्रनुष्य भैयो जैयत । परंच भ' गेल सचिवालवक किरानी । आव को कही तकरा ? किरानियों होयब इष्ट्याक विषय भ' सकैत अछि ? ओ तैं मित्र लोक अछि । ओहो ओएह अछि जे हम छी । हमरा दुनू गोटेक बीच कोना दूरी नहि अछि । हमरासोबनिक कष्टमें कोना भेद नहि अछि । हम तैं ....वेसी काल ओहु लोकक चिन्ता अपनेसँ जोड़ि क' देखैत छी (चुप भ' जाइत अछि, हेरायल सन क्रममें एक

निराश युवक पाछाँसँ आविक मंचपर भीतर दिस बढ़' लागैत अछि । ओकरा जनैत देखिक' एक क्षण ठमकि जाइत अछि । फेरो किछु दूरपर दर्शक दिस फोट क' क' बैसि जाइत अछि, अपन दुनू हाथके पाछाँ टेकबैत पंजापर भार द' क' झुकल ओकर कन्दान ज़ांरो पाछाँ दिस पड़ल देखाइत रहैत छैक । ओत लोकसभ क्यों तैं सुगबुगाइत अछि, मुदा बेसो निष्प्राण जकाँ रहैत अछि मंचपर ।)

युवक-जनैत छिएक, तखन हमरा बड़ विचित्र लगै-ए ।

व्यक्ति क्यों एक-खींझायल आँहकें तैं सभटा विचित्र लगै-ए ? की विचित्र लगै-ए ?

युवक- (शान्त भावें) अपन पूर्व संवादकें जेईब अछि, खाली एक बर ओहि टोकारी देनिहार व्यक्तिके देखैत)-लगैत रहै-ए जे एहु बच्चाके हाथमें एकटा सुन्दर खेलौना द' क' फुसिया देल गेलैए । पाठ देल गेलै-ए जे खेलौ ग' । आ घर पहुँचैत देरी ओहो खेलौनासँ बहुत रास विपद् कोड़ासभ उहि-उडिक' ओकरा डैस' लगलैक, डंक मार' लगलैक । ओ छटपट करैत एहि कोनसँ ओहि कोन धरि पड़ाइत रहल । सर्वग बेधाइत रहल । एहि संकट कालमें ओ एकरासँ रक्षाक युक्तिवो विसरि गेल । (कहैत-कहैत जेना साँस तीव्र भ' जाइत) औपध विसरि जायब रोगक हेतु केहन खतरनाक भ' सकैत छैक ? (क्षण भरि सोचैत) हम ओकरासँ जेत नहि छिएक । हम ओहि लोकके हृदयसँ स्नेह करैत छिएक । आखिर ओहो तैं दुनू पयर बान्हल कड़ादुर अछि नै । एहन बहुत गोटे छथि । हम हुनकालोकनिसँ ईष्या किएक करबनि ? ओलोकनि तैं हमर प्रिय बन्धु छथि । बन्धुसँ भला क्यों ईष्या क' सकैत अछि ?

(ओ वंचैत जकाँ, परंच धीरे-धीरे पाछाँ दिस घुरि जाइत अछि । पार्श्वमें किछु लोक छथिहें । जायबलासभ सेहो नहि जाक' जगह टा बदलिक' कोनो-नै-कोनो मुद्रामें बैसल ओ डटल छथि । क्यों कहना क' तक्रियापर, क्यों परपर पर चढ़ा क' । एहि युवकसँ असंपृक्त जकाँ । युवक चलि रहल अछि संड' । एकदम स्थितिल पड़ैत छैक । ओ चिन्तित अछि । ओ एक बेर फेरें चारु दिस एहि दृष्टिसँ देखैत अछि जेना एहि बीच ओकर इच्छाक भौताविक सभटा कलावरण बनि गेल होइक । ओ वदिक' ओत' जाइत अछि जत



एकटा युवक पड़ल अछि । युवक ओत ओषणयल अछि जे ओकर धकनीकेँ व्याक क' रहल छैक । युवक ओकर लग जाक' कने झुकि क' देखैत छैक । ओहो सभ भरि गर्भनि उदरव चडैत अछि । परंच से उठबैत नहि छैक । ओकरा नहि देखैत छैक । अपन जेरीपर माया राखि क' घमसक डटो तोड़' लगैत अछि । युवक निहुरैत-निहुरैत उठिक' एक बेर सभकेँ, सुतल-पड़ल मंचपरक लोककेँ, रसिककेँ देखैत अछि । लग अबैत अछि आ बड़ विनम्र भ' क' निवेदन करैत अछि ।)

युवक-जेना कि ई भाइ सहैव एखन कहलनि जे आठ बाजि गेल अछि, अहाँलोकनि यदि हमरा आज्ञा दी तँ हम एक टा सपना देखि ली ? दोसर लोक-(घयहायल-इहयहायल क्रमे) आव तँ कोनो सन्देह नहि । जेना सपना नहि भेल, अयना देखब भ' गेल (व्यंग्यसँ) । भलगानुप सपना देखबाक लेल बसतसँ आज्ञा माँडि रहल छथि । (हँसैत । ताहि हँसोमे किछु आर गाँटेक हँसी मिज्जर भ' जाइत अछि । युवक जाइत-जाइत घुरि क' तीक्ष्ण व्यंग्यसँ देखैत छैक आ जेना चुनौतीक सङ कहैत छैक स्वरकेँ भारी गम्भीर करैत ।)

युवक-ई, यदि अहाँक आज्ञा हो तँ हम एकटा सपना देखि ली । (बंचपर अचिक' ओ टाड़ पसारिक' ओलहि जाइत अछि । एकके क्षण मे कछमछाइत जकाँ बंचसँ उतारि जाइत अछि जेना उड़ीस कटैत होइक । किछु क्षण जेना किछु खेच' लगैत-फेर घासपर पसारि जाइत अछि । सभ निपिकरि छैक । ओ हाथकेँ माथक नीचाँ रखैत अछि आ ओखि पुनचाक प्रयास करैत अछि । फेरें पपनी खोलैत अछि आ अलसित होब' लगैत अछि । आकृति किछु तेहन मोलापम जकाँ भ' जाइत छैक जेना कि कोनो प्रिय यसातक सिंहकी ओकर आकृतिकेँ छुविक' चलि गेल होइक । ओ तृप्त भ' रहल हो । परंच, ओकर ई वृणितक भाव तुरन्त मिझा जाइत छैक । ओ ओकर आकृति फेर पूर्ववत् करिछओन होब' लगैत छैक । ओ किछु तेहन-सन भाव प्रकट करैत अछि जेना ओ मने-मन कोनो मार्मिक-सन स्वर सुनि गेल हो । बड़ उद्दिग्ग भ' उठल हो । एक बेर कान लगबैत अछि । हल्लुक स्तरपर सुनाई पड़ैत छैक नेनाक 'बाबू बाबू, जल्दी आउ नै...बाबू आ जल्दी आउ नै555 ।' युवक सुनैत अछि ।

तुरन्त सोर-पोर ठठिक' टाड़ भ' जाइत अछि आ हाथक झोरोकेँ तेना सम्हार' लगैत अछि जेना ओहिमे वस्त्र-जात भरल होइक । ओ भारी होइक ।

यथास्थितिक बांध होइत ओ हताश भ' जइत अछि । ठकमूड़ी जकाँ लागलमे ओ हुनु हाथमे हाथ दाबिक' भूमिपर बहिरि जाइत अछि । ओकरा ऊपरमे नहि-नहि मेघक छँडि जकाँ अन्हार अबैत-अबैत गाड़ होब' लगैत छैक । अन्हार गाड़ होइत चल जाइत छैक लगभग । फेर एकदम अन्हार भ' जाइत छैक धुप । पूरा मंच अन्हार ।)

### दृश्यांतर

### दोसर दृश्य

(आहि युवकक नाम रमेश छैक । मंचपर धूमिल इजोत छैक । रमेश टाड़ अछि । आरचर्यमय खुशीसँ ओकर ओखि घमचमा उठैत छैक । ओ अपन गज्रिक दिशामे दू डेग बढिक' फेर सकि जाइत अछि । एक टा किशोरी उन्नय-बोस वयसक उदास जकाँ आबिक' ओकरा कातमे टाँधि भ' जाइत छैक करीब-करीब सरिक' । किशोरी जाहि दिससँ आयलि रहैत छैक ताहि ठामसँ पाछाँ-पछाँ मंचपर गुलबी प्रकाशक एकटा पतर अवर्त उठैत-बर्तत सम्पूर्ण मंचपर पसरि जाइत छैक । हुनु गोटे टाड़ अछि ।)

(पाक ओरह छैक । मात्र बंच हटाक' कम क' देल गेल छैक । एक दू टा रोमांटिक प्रकारक फूलक गमला बेछाड़ पडि रहल छैक, छोट-छोट फूलक थोकाबला । चारि-पाँच टा गमलाक बीचमे एकटा सुखायल टटावल मौसमी फूल । गल्लक ठठरी छैक गमलामे । एक क्षण ओकरा देखैत किशोरी ओकर हाथ पकड़ि लैत छैक । फेर ओतहि बैस लैत छैक । ओ बैसि तँ जाइत छैक परंच, किशोरी किदस देखबासँ कनछी कटैत अछि बच' चाहैत अछि । किशोरी दिस देखबासँ कनछी कटैत अछि बच' चाहैत अछि । किशोरी ओकरा देखैत छैक । फेर जेना किछु सोचिक' एम्हर-ओम्हर देखैत।)

किशोरी-काँ बात छैक ? आ आइ मुहबब्बी बन्द रहतैक ? (ओ उदर करैत छैक । युवक ओकरा दिस देखैत छैक आब' बजैत नहि छैक किछु । किशोरी ओकरा मनबचाक लेल मतलबसँ देखैत छैक । ओ



जेना तैयो नहि मनैक । एक खण चुप्पी । फेर स्थिरसें पूछ' लगैत छैक) वंस, अहाँक कविता-लपिता छपल-ए कोनो पत्रिकामे एकर ? (किशोरीक प्रश्नपर युवक ओकरा देखैत छैक । बजैत तैयो नहि छैक । तखन किशोरो किचकिचा क' बाज' लगैत छैक) अहाँकेँ किछु पछियो रहल छी ? बजैत छी किएक नहि ?

रमेश- किए ? तोरा कोना सख भेलौक कविताक आइ ? (उपेक्षार्थ)

किशोरी- हमरा नहि । मुदुलाकेँ बतहपनी छैक । चुप्पी बड़ प्रशंसा करैत छलै-ए ।

रमेश- को प्रशंसा ? ओ तँ भरिसक बुझने ने होयतैक कविताकेँ ।

किशोरी- तँ एहन वस्तु लिखबे किएक करैत छी, जकरा लोक बुझबे नहि करय ?

रमेश- एकर जयाव किछु नहि छैक नीरा ! कमसँ कम हमर लगमे नहि अछि ।

किशोरी- मुदा से जान' हम ककरासँ जावय ? अहाँक महाकवि निरालासँ (ओ चुप्पी भ' जाइत अछि । फेर जेना किछु सोचैत-सोचैत भनै-मन उदास भ' जाइत अछि । कहैत छैक)

वंस रमेश, ई को बात छैक ? कविता हमरा नीक लागैए, ताहि बातमें हमरा अहाँ होन कहैत छी आ जखन ओहि कविताक विषयमे अहाँसँ जान' चाहैत छी तँ अहाँ टारि दैत छी । किएक ? हमरो लग भाषा अछि । एम० ए० मे पढ़ैत छी । कविता भाषेमे होइत छैक ?

रमेश- होइत छैक । मुदा कविता लेख भाषा पहिल जरूरति नहि धिकैक, नीरा पहिल जरूरति छैक भूख । भूखेँ अन्न उपजा लैत छैक । मर्नक अभावे आ अन्हार तकलोफे कविताक जन्म दैत छैक ।

किशोरी-हँ, मन पड़ल । ( अकस्मात् जेना किछु स्मरण भ' जाइत) मुदुला अहाँकेँ नोट द' क' खोआव' चाहैत अछि । ओ बड़ चाहैत अछि । अहाँक कवितामे ओकरा ओ किछु बात लगैत छैक । हम-ओकरे भाषामे ओहिना कहायक प्रयास क' रहल छी ओहन किछु भेटैत छैक जे विवशताक धमधोर जंगलमे साफ-सुथरा एकपेड़िया देखा देअय आ दूर-दूर धरि प्रकाश ।

रमेश- नहि जर्नैत छिएक, ओकरा को लगैत छैक हमर कवितामे, वा कोनो कृतिक कवितामे । परंच एतया बात हमरा बड़ साफ-साफ लगै-ए

नीरा, जे कविता कमसँ कम सफल रोटीक समाधान तँ नहि होइत छैक । अब हम अपनाकेँ बड़ उबिआवल अनुभव करैत छी । (रोटी आ उबिआवल बड़ जॉर द' कहैत छैक)

किशोरी-अहाँकेँ भूख नहि लागत का ? कत' खयलहुँ अछि आइ ?

रमेश चुपचाप भास खाँटैत अछि आ जीवित गमला दिस संकेत करैत अछि)

रमेश-कविताक स्थान ई धिकैक-गमला । कतैक विचित्र स्थान भ' चुकल छैक एकर । हम किछु ने क' सकैत छिएक । अपन ई स्थान कविता स्वयं लेलक अछि । लंअओ हमरा की ? हम तँ आज बहुत उबिया गेल छी । हमरा तँ.....हमरा तँ आज तोरेसँ भेट करवामे घबड़ाहटि होइए ।

किशोरी-हमरासँ भेट कर' मे घबड़ाहटि ? रमेश, हम कविता नहि बुझैत छिएक तँ कि ? अहाँकेँ प्रेम नहि क' सकैत छी ? हमरासँ घबड़ाहटि होअय अहाँकेँ आखिर से किएक ?

रमेश-कथु ले' नहि नीरा । मात्र इएह लागैए-जे आइ सत्यता छैक, सैह कारिह तोरा ओखिमे विश्वासघात बनि जयतौक । ताँ भरि जन्म हमरा उपराग दैत रहबेँ मनमन आ दुःखमे, सुखमे जीवैत रहबेँ । ई बात भयावह छैक । हमरा एहन भयावह परिस्थितिसेँ घबड़ाहटि होइत अछि नीरा ।

किशोरी--(तटस्थ होयबाक मुद्रामे जेना लाचारी प्रसंग बदलैत कहैत छैक) आइ भौजी अहाँक पसिन्नक वस्तु बनओलनि । बहुत पुछैत छलौह । अहाँ की एतया विनसेँ इन्टरव्यू द' रहल छलहुँ । ?

(हाथक बैग खोलैत अछि आ कागजमे सपेटल पकौड़ो बाहर करैत अछि, ओकरा सोझैमे । फेर बड़ सहज स्वरेँ कह' लगैत अछि ।)

भौजी कहि रहल छलौह' हम अहाँसँ झगड़ा कयने छी । (रमेश कृतज्ञतासँ ओकरा दिस देखैत छैक । फेर जेना ओकर भौजीक स्मरण होइत अन्वमनस्क जवौ भ' जाइत अछि । बड़ गहोर विवशतासँ कहैत छैक)

रमेश-हमरा लेल आज बहुत मोस्किल अछि नीरा । बहुत मोस्किल ।

नीरा-को मोस्किल अछि ?

रमेश-तोहर भौजीक उपकार आ तोहर विश्वास । एहि दुनुक त'मे हम



अपनाकें तेहन जाँतल अनुभव करैत छी जे... अकरा कहब अगम्यपव ।  
(एक सेकण्ड चुप होइत) अपन बेकारी आ भविष्यहीनता पर्यन्त  
एकरासँ कम्पे लगैए नीरा ! बुझ मे नहि अबैत अछि, हम एहि दुनु बात  
सँ एतए दबाव किए अनुभव करैत छी ? पता नहि चलै ए ।  
(उदास आ जेना एक अपरिचित लोककें चिन्तबाक' चेष्टा कायल  
जाय' नीरा ओकरा सहित देखैत छैक । फेर एक क्षण सोचैत आन दिस  
देखैत छैक । तखन फेर रमेश दिस देखैत छैक । पकोड़ीवला बड़का  
कागजक पृष्ठिया आय खुल गेल छैक, पूरा । पकोड़ी देखाई पड़ि रहल  
छैक)

नीरा-अहाँ खाइ किएक नहि छी ?

(ओ पकोड़ी उठाक, मुँहमे दैत अछि आ मुँह लाइ लागैत अछि ।  
नीराकें स्नेहसँ देखैत छैक) आखिर ई दबाव अहाँकें माथपर कोना  
हैत कहियो ? कौन तरहेँ हटत ई दबाव ? हम कविता तँ बुझैत नहि  
छिएक रमेश ! (क्षणिक विवशतामे जेना कविताक गण्य हम नहि बुझि  
पवैत छी ।

रमेश-(किंचित तमासाइत बेर-बेर तोँ हमर कविता नहि बुझबाक बात की  
कहि दैत छै ? की मतलब छैक तोहर ? तोहरा कविता नहि बुझि  
सकत हमर दोष नहि अछि । (क्षणिक चुप्पी । फेर कने व्यंग्यसँ) आ  
धर तोरा जरूरीयो की छैक ? कवितामे तोरा लेल किछु रखल्यो ने  
छैक । एम० ए० क' रहल छै । कतहु कालेजमे प्राफेसर बनि लिहै ।  
पोथी लिखिक, कोसमे लगबा लिहै । रायल्टी अवैत रहतौक ।

नीरा-(निरुद्धिग भावसँ) अहाँ लेल पानि कतसँ आओत ? अहाँ तामसमे  
खद्यो नहि करबैक ? भीजीकेँ केहन अधल्लाह लगतनि ?

रमेश-हम ओहिना गोड़ि लेबैक । पानि नहि चाहौ ।

नीरा-(किचकिचबैत) थोड़ेक कविता खाही अर ?

रमेश-तोँ जैत छै हम अपने बहुत परेशान छी । एना किचकिचबावे आ  
कोनो कठोर बात कहि देखौ तँ घर जाक' कनबै । की लाभ ?

नीरा-लाभ अछि तै ने अहाँकेँ किचकिचायबाक खतरा उछा रहिल छी ।  
(जेना स्नेही दुष्टतासँ धरिक्') असलमे अहाँकेँ किचकिचायबामे बड़  
रस अबैत छैक ।

(रमेश ओकरा देखैत अछि । फेर अकस्मात सामान्य बनि जाइत  
अछि । फेर बड़ समत्वसँ नीराकेँ देखैत अछि आ थिहुँस' लागैत अछि ।  
हाथ उठाक' नीराकेँ धापड़ मारबाक अभिनय करै अछि । ओ स्थिर  
रहैत अछि । डरबाक कोनो मुद्रा नहि देखबैत छैक । उन्ने खूब  
गम्भीर आ उदास भ' जाइत अछि । प्रत्युत ओकर आँखियो छलछला  
जाइत छैक । एहि बातकेँ प्रकाशक प्रयोगसँ स्पष्ट कयल जाइत छैक ।  
रमेश ओकर तरहथो अपना दिस छोपैत छैक आ छाती लगसँ कलम  
बहारक' ओकर तरहथोपर किछु लिख' लागैत अछि । नीरा पड़बाक  
पल करैत पुछैत अछि)

नीरा-ई की लिखि देसहुँ अछि ?

रमेश-कविता ।

(फेर स्नेह आ व्यंग्यसँ थिहुँसैत छैक । नीराक टांडी झुकि जाइत  
छैक । रमेश ओकर कपाटपर हाथ रखैत ओकर मुँह ऊपर उठबैत  
छैक । तखन नीरा ओकरा प्रगाड़ भ' देखैत छैक । फेर तत्काले ओकरा  
कोसमे मूड़ी गाड़िक' कान' लागैत अछि । रमेश किछु काल हतप्रभ  
रहि जाइत अछि । फेर सामान्य बनल अपन निष्प्राण हाथकेँ माथपरसँ  
छहलबैत ओकर पीठ धरि ल' जाइत अछि आ अपन अत्यन्त रिक्त  
आँखिकें ओहि दिस ल' जाइत अछि जाहि दिससँ नीरा आयलि  
रहैक । एखन ओहि दिस प्रकाश-योजनासँ, अन्हार जकाँ छैक । ओ  
अपन आँख घुमा लैत अछि आ नीराक पीठपर रखैत अछि । फेर जेना  
बड़बड़ाय लागैत अछि ।)

रमेश-हम कविताक अतिरिक्त किछु लिखबो तँ ने जैत छी । कविता हम  
की लिखब ? कविता हमर भविष्य अछि । तोहर तरहथोपर हमर सँह  
भविष्य .....

नीरा-(विचित्रमे जेना जोरसँ पिकरैत कहैत छैक) नहि-नहि । कविता धर  
नहि थिक । धर नहि होयत कविता । (एक सेकण्ड चुप रहैत)  
भदवारि आ जाइ अयबे करत । कविता छता आ गर्म कनी कपड़ा  
नहि थिक आ ने कविता...ने कविता धनसाधारक सभदिना ओरिआओन  
बनैत अछि । रमेश अहाँ...(जेना अत्यन्त असमंजसमे पड़ैत) अहाँकेँ  
हम किछु कहियो तँ नहि सकैत छी ।

(रमेश ओकरा दिस देखैत छैक । उदास हँसो हँसैत अछि । तखन जेना



एक टा सौझ राति दिस घोकवल जा रहल छल से प्रकाश राजनारम  
प्रदाशन भ' रहल छैक । चिदै चुनमुनीक घर घुसक बानक भानुप्रभाष  
कारखान हल्लुक कौखल ऊँच स्तर पर आँच रहल छैक । नारायण पीठपर  
गहल रमेशक मनने छति भ' रहल छैक एक कविता । आकर  
पुत्रभूमिमें धरि प्रभाव रूपमें आह कविताक पत्ते गुँजन छैक )

बिना चूल्हपर चढ़ीने त'ब  
कयल जायत, रहि सकैत अछि प्रेम  
बिना चूल्हपर चढ़ीने त'ब  
कहिया धरि कानाक' चलायल जा सकैत अछि  
घर आ द्वारि ई सगर  
मित्र छुरि जाउ घर  
सौझ पहि गेल ।  
घुरि जाउ घर मित्र  
सौझ पहि गेल ।

(रमेशक हाथ नोगक पीठपर जग खूब जगम पहि गेल छैक ।  
भारसक, नोग चलीक लगे उठैत अछि । एकर पर मयन चुप अन्तरजन  
अन्तरादक वातवरण छैक । रमेशक आकृतिपर ल' नन्तर प्रकाश पहि  
रहल छैक नाहिसँ धुझल छैक जग आकर मनन छति भ' रहल ई  
क'बल आकर भयक ई बाल-मुनि लल गेल छैक आ तन्नाल जग  
क्यस्त भ' जाइत अछि । नीरा कही बीच झटकि क' अपन गूड़ी उठैत  
आछि । आकरा दिस देखैत छैक । नोगक अँचल लल पतिव दहाइत  
काचक गोली जकाँ दखाइत छैक । आकृति मानदइल हटका फूल सन

नीरा अहाँ की कहैत छलहुँ ? की कहैत छलहुँ हमरा ?

रमेश आव सौझ भ' गलैक नीरा । घर जो ल'क चिन' करैत होयत

(रमेश अपना भरि स्थिर हयथाक प्रथम करैत कहि जाइत छैक

नीरा वृष्टन अछि हमरा, अहाँ हमरामँ उबिया जाइत छे । हमर उपस्थितिमें  
अँचलइत छे अहाँ । किछु मज्जसक दृष्टम पहि जकाँ गक भ'  
देखैत पूछ' लगैत छैक मुदा अहाँक आ मनस पुरो स्मृति ? तकर क'  
होयतैक ? ओ वर्ष-वर्ष पैघ होइत जायति । समझि भ' जायति हम

एकर आकर विग्रहक इतिहास क' सकैतैक ? दोसराक घरसँ  
अहाँक बेटीक संभव होयत विवाह ?

रमेश- (कराँच-करीब उन्नयनमें आकर बाकें करैत) बकारक भक्तता  
भिकक ई मध । उकरा पर नहि छायक नहि । (अगहय जकाँ  
होइत) तकर बचक'क' व'रग भ' जाइत छैक । (एक सकण्ड चुप  
रह' स्मरण मसक म'द' क'र'गक शिकार भ' जायत

(नोगक आकृति कल'सँ तनना जाइत छैक । तकरा परबधेन रमेश  
कहैत छैक) हम ज्ञान दे छिअँक आ तकर सुख क'हियो बाधक  
नै बनैत । ओ तँ जहिया मनस जगमलैक तँह'ग मन' म' मरि  
अयलैक । आकरा दुध तँ क्या पिअँकैक तँह' आकरा क्या औषध  
आपि क' नहि दैक

(नोग खल शान मुदा वल लेख आँखिमें रमेशक' देखैत छैक ।  
रमेश ओकरा देखि रहल छैक एखन)

नीरा कविता बहुत निर्भर हाइ-ए । मध फाँड़वाक पाधर आ कि फेरो इति  
अवरक सेल एकटा काशी-कमला, किछु । नहि ?

रमेश 'कएक पृष्ठ छे' ?

नीरा-एहिना । ज वस्तु इ' ल'गैत छैक तकरा खूब नोड जकाँ जति बूझि  
नचक मोह हाइत छे । (किछु सकण्ड चुप) स्मरणक विषयमें  
लोक कहैत छैक बड म'क'ज' हाइ-ए । बकरा पछि करै-ए ।  
जोवनमें प्रेम करै-ए । जीवनपर प्राण दै-ए । बिघरी काटि-काटि क'  
मोरो रलत, तैयो पता नहि 'कएक, गृहस्थीक' किर'क एनेक प्रेम  
करै-ए ?

रमेश-ई गृहस्थीमें, जँ हो तखन । हवा आ पानिसँ तँ नहि ।

(दुनू एक दसराक' देखैत अछि फेर अँगा दिस । फेर पक'टो दिस  
फेर नीरा शिकाइनसँ रमेश दिस ।)

रमेश-

तखन ? (दुनू एककें घेर करैत छैक ।)

नीरा-

रमेश-बाज ।

नीरा की बाज ? अहाँ वाड । अहाँक अनुभवसँ हम कनेक जगाम छी ।  
रमेश गनन वात नहि वही नीरा ! (क्षण भरि मिलमेल कह' लगैत छैक)



माने लें हमारा सारा मन्त्रक मानविक जीवन धर्म जहाँ रहित है  
को हाथीक ? यदि परिस्थितिक अन्त लड़ कर कहें

नीरा फर वह कवित्वक भाव (जना असरी हाइन अकस्मात्)

रमेश (सयत स्वयम्, नानावर्णक नीराक सम्भवक कथा कहत हैक)  
'आज घर जो मोरा'

(नीरा ओकर विवशतामें दखत हैक । एक क्षण मति-धुनिमें गड़लिन  
गैत अछि । पछि, रमेशक अन्तर आकरा किछु नहन रहत। एव  
तत्पश्चात् देखाइत हैक ज ओ अछि ध' जहाँ अछि एक वर रमेश  
दिय पुन- एहि अपश्राम देखत अछि ज भारिक आकर कथामा  
समाप्त भ' गेल हाइक । ते नाह भल हैक । आ नचार भावमें डा  
ठठव लागत अछि । रमेश सह सह चलत हैक । दूनु वृष अछि  
दूनु एक स्वयं दर्शक चलि रहल अछि । चलत चलत दूनु नाहि  
अवाजम चलत लगत अछि आबरा दूनुक अन्तर दूरी एकद्विदिशाम  
बडत चलत लड़त हैक । सिंगे नाना वर्णक रंग कन टर्माकि जइत  
अछि नीरा किछु ठर्मक क' धर्म जइत अछि । अन्तमें आहिना  
मिश्रयल हैक)

नीरा-घर आदय ?

रमेश-अब नहीं (रमेश एकदम विचित्रक भावनामें कवि जइत हैक । नीरा  
हस्तप्रभ रहि जाइत अछि ओकर रहत निराश्रित अन्तरमें तर्वापि ठर्मक  
क' उन बहुत प्रयत्न करैत जइत हैक)

नीरा धैजी कहन रहति कह' ले' ।

(आ अगर् बड़ जइत अछि यदि घर ओ अन्तरक अन्त अन्तरिक क'  
बड़ जइत अछि । रमेश रुकैत बड़त भुगिक' जय पराजित जक'  
वाच भवपर चिन्तित टाड भ जाइत अछि । मात्र अन्त आवृत्तिमें उपर  
दिग अगर् वहन दू धरि दख' चलैत अछि चलैत भ' जइत अछि  
जना ओकर वेगनामें दूगुणित हैक आता ज मदी न अपन रहक'  
नचिक' फकि देत ओकर हाथ भाव विगड़ल हैक । उद्विग्न भ' अ  
हन' लागत अछि । ओकर हाथम किछु हैक यदि लटकल पांच  
ओकर मुद्रा एकन हैक । जना ओकर हाथम काना इतरो लटकल  
हाइक मदा म आ स्पर्श नाहि क' पवि रहल अछि आमा हाथ  
आहिना मदान रहिना हाथमें अये हथका अछि कुलक पत्रमक

फर हाताश भ क' एत अन्त नल नगैत हाथ लखन पछाँमें एक  
टा दुनक अये। हैक वयस बीस बाइस वय उदास हैक आ ।  
अन्त युनक पहिल दृश्यक पाछाँमें अन्तरिक मन्त्रपर दशक दिस पाठ  
क क' वैय गन रहैक आहिना चिन्तित अछि )

(युवक रमेशक नमस्कार करैत हैक । आ अन्तरमें ओकर देखैत  
हैक । ओकर आँखम 'इ क थिक' से जिज्ञासक भाव लक्षित भ'  
रहल हैक)

युवक अहाँ हमरा चिन्तनहुँ ? हम अगर छी गैया ?

रमेश-अगर की समर ?

युवक अगर ।

रमेश येन वेस कतिया अगलह दिल्लीसँ ?

युवक दि नीयें ? (विस्मयपूर्वक) हम तँ गमसँ आगल छी ? अहँ तँ गमसँ  
अन्यत्र हाथ ने ?

रमेश-हँ गमसँ । (अन्त वृत्ति नगैत) रहिना । हैक मोरे जकाँ बगलमें  
इतरी लटकल कलकल दिगो रङ्गल-कालजक सुन्दर सुन्दर भावित्यक  
संस्कृतिक, खल कुद आ भोज कायक दृश्य प्रमाण पत्र (जना  
कनक चित्तमें) आ आचरण सम्य-धी प्रमाण पत्र (तुष) तारा सङ्ग  
हाथ ने ?

(रमेशक एहि प्रश्नपर युवक हसित भ' जाइत अछि बड अभिमानमें  
अपन लटकल ओरो दिग दल्ले-ए आ अपन चायतपर संतुष्ट भ'  
जइत हैक आ अन्त उदास भ' जाइत अछि ओकर मुँहपर  
धूमिल प्रकाश पडि रहल हैक आ दशकक दाख रहल अछि ।  
गाम्भी आँख किछु सफाक बाद स्वगत जक')

(युवक रमेशक नमस्कार करैत नैक आ अन्तरमें ओकर देखैत  
हैक । ओकर आँखम 'इ क थिक' से जिज्ञासक भाव लक्षित भ'  
रहल हैक)

युवक-अहाँ हमरा चिन्तनहुँ ? हम अगर छी गैया ?

रमेश-अगर की समर ?

युवक अगर

रमेश-वेस वस कातरा गायनह दिल्लीमें ?

युवक-हो-नाहीं / विगत-नृत्य । हा तँ गायन अ लो ओ / अहूँ तँ गायन  
आयल हयत न ?

रमेश-हँ गायन । (वेस चार गायन पुराने लोक तर जहाँ गायन  
ओ लटक अने दिखे) मूँ न कलकत्ता मन्दर मन्दर गायन क मोकुलक,  
अन मूँ न ओ समान कयक दाने प्रमाण पत्र । (रमेश कनक बिलमैत)  
ओ आचरण-सम्बन्धी प्रमाण पत्र... (चुप) तौ सड़मे होयतह नै ?  
(रमेशक एहि प्रश्नपर युवक हर्षित भ' जाइत अछि । बहु अधिमानस  
अपन लटकल झोरी दिस देखे ए । ओ अपन गायनपर सतुष्ट भ'  
जाइत अछि परंच रमेशक ओखि एक टा भयावह रिक्ततासँ भरि जाइत  
छैक । ओ अन्ततः उदास भ' जाइत अछि । ओकर मुँहपर धूमिल  
प्रकाश पड़ि रहल छैक । ओ दर्शककेँ देखि रहल अछि । मामूलो  
आशिक किछु चेष्टाक बाद स्वयं गज्ज)

रमेश-ओएह क्रम अछि (अकस्मात् मानसिक उन्नतासँ भरि) ई क्रम  
तत्काल भयावह आ एतन्त्रसँ भरल अछि । लोम परमल अछि ।  
मानक सल पत्र नहि सनैत छैक जे ई मन्दरतासँ छापल, मन्दरमें  
रागल कागतक बेधदामभ कहन विषय अछि । एक सम्पूर्ण पाठक  
अत्मविश्वासमे उतरि जाइत छैक । आत्म-आत्म मूल बरिभ' धिया  
जाइत छैक । आओर एकटा सम्पूर्ण पौड़ी अपन चकारी, दिशहीनता  
आ अन्तर् भविष्यक स्वप्नक' खान लाल लालसँ मनमन चिन्तितइत  
सहि जाइए । लगमे पद्यमक काना निमहनाक इतर काना शुभ  
आयोजन होइत रहैत अछि । ई सिलसिला कतक भयावह अछि ।  
(ओ जना एकाएक भय पड़ि गलापर दखैत आगरक' एहि बीच  
लगातार अमर ओकर विस्मय चिन्तनसँ दूरेत रहैत छैक । रमेश  
उदास बिहसैत छैक आ बड़ स्नेहसँ पृष्ठत छैक ।)

रमेश-अब' काल माय की कहलकह ?

अमर-कहलक, तोहूँ नोकरीक आराममे पड़ैत' मुरा जक' बाँडय भयक'  
बिसरि नै जई । हम तँ मरियो नै सकै

रमेश-(विच्वेमे) हँ, छैक । मुरा जनेत छह हम नैकरो ल' आयल तँ रही

अवश्य, मुदा जइ धरि कि नोकरी भटल हमरा ? माय हमरापर छथें  
तमसायल अछि । (क्षणीक चुप्पीक बाद आत्मस्वीकारक श्वाभिम)  
हम आक्रमक प्रकृतिमे लगे अछि विस्मयमे अमर । माय अछि हमरा  
आत्मा । हम आगत जइयक' एक' तिन' बना मान पावत नैह भूत  
पअलहुँ । खहं पकक बंचपर कि कानो दासक पर

अमर-(किछु असमंजसमे पड़ैत जहाँ मुरा भय' माय तँ हमरा मूँक  
भैलक विषयमे कहलक-मुरा भैलक विषयमे अहाँ किछु मूँक  
नै गज्ज)

रमेश-(जना एतन्त्र अने चेतना प्राप्त करैत) अरे...हँ ! मन पढ़ल । मन  
तँ हमरा । मुदा अमर...(फेर अनुपस्थिति जक' भैस, तँ तौ' व' क'  
मैक' लिखि दहक जे नोकरी नहि भेटल अछि । भोटिमे पातर लिखि  
देयक । एखन जेते तेरे' एगुशन न्यून क' क' गूतर करय  
चिन्ता नाहि करिह' । हम बुद्धिया माय नहि विमरि सभ्य छी ।  
बिसरियो नहि सकत । मुदा, कालि लिखि दहक अवश्य (रमेश लगे  
भ' क' आकर क हा धपधपइत छै) तना रनह भयसँ एकटा बटका  
भाइ क' मर्कन छैक । एकर अकर कुन तक भयमे दखत छैक  
आकर आकृति छूकि एत छैक

रमेश-वेस तौ' किछु खयलह ?

अमर-(चुप रहैत छैक, मूडी ल'क जेन)

रमेश-अर्ये, किछो नै खयलह ? एखन धरि भुखले छह ? विचित्र बात ।  
तौ' हमरा पहिने किएक नै कहलह ? झंझमे द' दैत छह तौ' । अज  
एखन को व्यक्त करु हम ? एतना जलजल' द' रहितहते तखन  
धरि (किछु मोर्चेन) एना कर' ज' वगनी हवाडैत । हमर जेना  
किछु पाइ अछि । ओ ओ आह दिस (विगत दमर दिस झूमल व रहत  
छैक) पूर पाथपर किछु किछु बिकाइत रहैत छैक खयक दाम ।  
(फेर जना एकाएक प्रसन्न होइत) अर, पत्र' रहामे भइ बुद्धिया माय  
नृत्योकर मूँ पकक' राखैए अपना सभ ले' । कये देखलक  
जाक' । फूँस' जाह । (अमर किछु हिचकिचाइत छैक मयजम ।  
मुदा आकर बहक दोगसँ प्रभावित भ' क' तना चला गइत अछि  
निगल बाहर एना आकर अदृश्य हाथ' धकलन ज' रहल द'छक  
जाइत काल रमेश ओकर कान्ठपरक झोरी उतारि लैत छैक । कहैत



रमेश-खाइया काल झरो लवने रहव' की ? तो' की गदहा-घड़ा ल' न बड़ा लवने चरव' आ मनी पीव' ? एकए एत' सखह आ घुरिअ' आवह तुरन्त । हमरा निन्न बह जल्दी अवि जाइत अछि आ ताससँ गामक हालचाल बुझबाक अछि । जा आआर आ ।

अमर आ सादिक मन मुन चले जइत छैक । रमेश आकर झरोमसँ कागज-पत्र बहार करैत छैक । ठनटि पुनटि क' देख' लगैत छैक । विधो छैक । आरा प्रमाणपर तरह क' कहि किछु 'महाकाव्य विद्यापति परिषद्, मधुबनी कालेजक प्रमाण पत्र बेस मोट-मोट अक्षरम जगतिआ छैक । ओह कागज पत्रधारण करि छैक । छोट-छोट मणिछोह कपडाक पोतरी बहराहत छैक । ओकर हाथमे उठविते जेना कानो मोहक गंध आकर नामके पैसि जाइत छैक । से बात रमेशक अकृतिपर उतरल भावसँ बुझाहत छैक । प्रकाश-संयोजनसँ ई देखाओल जाइत छैक । रमेशक ओख चल्चला जइत छैक । मुन, तत्काल सुन' भ' जइत छैक । कागज पत्रसभ पसरल छैक । पोतरीकें उठक' आ एक बर ओम्बक माझ रखै ए ऊपर दिस । फेर ओकरेपर व्यथ आ कलमसँ लिहैत अछि । अस्पष्ट सन हुंकारो भौन आछि । फेर बिना क' पत्रकें समेटने एक दिस पाँइ जइत अछि । निरुद्ध । ओखपर जोह राखि लैत अछि ओ । अपन पहि मुझम अत्यन्त चिन्तित आ दुखी बुझाउ पडैत अछि ।

आकाससँ अमर अवेत छैक । निर्दोष ल' । निरास । राशक' एना भ' क' पहल दंखि ओ टाड भ' तेन दख' लगैत छैक । एना ठकमुडी ल' जइत छैक ओकरा । फेर नहूँ रहूँ लगने दैसि जइत छैक आ आरिथक' कागज समेट' लगैत अछि । जहिसे बाधा नहि पहुँचैक रमेशकें ओ बधासमय तोकसँ सभटा कागज पत्रकें झरोम राखि लैत अछि । एक टा कागजपर रमेशक टाह मडल छैक । एकदमर गीत अमर ओकरा बहार कर' चाहैत अछि । ओकर एहि प्रयासमे ओ ओखपरसँ हाथ उठाक' देखैत छैक ।

रमेश आर गन' । (पुछैत रमेश अडिक्' गैत जइत छैक । महत्त्वपूर्ण व्याससँ कहैत छैक) जहाँ धरि हम बुझैत छी, अपनकें भोजन नहि भएल तायन अनर चहारजो । बुझैत गन शिखाइत करैत रहैत छैक

त सभ उभारी खा-खा लैत अछि आ पाइ देव ने करे ए । हम की करिबौक ? जतया पाइक जागड सगै ए सतब रोटी बनबैत छी । यस । चप्पो । फेर बजैत छैक ।) आइयो कम पाकल होयतक रोटी । बिका गेल होयतक । (फेर जेना अमरकें देखलापर चौंकेत अछि । कहैत छैक) अहि र वा तँ उगस किए भ' गेल' भैयारी ? ई ई पाटरी (आ पाटरी तबैत अछि आ एक कात पडल छैक) ई पाटरी तँ मानस्य बर विरान ल' न भइ क' दलक' प । अवि जा दू भाइ एहि चूड़कें भुजिला । कानिने भर दलल जयत । अवहि अग्रहि लखी आ । चूड़ा भइ जल्दी नम जाइत छैक । भाय' । अमर आकर जतय भिन्नित आकर आर लग भ' जइत छैक । तस पाटरीक राख छान्ना अछि आ अमरक हाथ पकाडिक' चूड़स धरेत अछि आ- 'शुद्ध कह' कहैत अछि । अमर ओकरा ओहिना देखैत छैक । फेर चूड़ा उठाक' एक मुट्ठी फाँकि लैत अछि । रमेशो एक फक्का लैत अछि । फाँकन फाँकन, चूड़ा पचयन मवाद बजैत छैक ।

रमेश-राग आघि जयलक दूर हरियर (मग्नाइ आ गन सहो रहितै एकग सङ्ग । अपुन स्वाद होइ छै, स्वर्णिय । (फेर अकरमात चुप भ' जाइत अछि, जेना किछु साचमे पाँइ जाइत अछि) मुन भइ, आरचय

अमर की ?

रमेश एहिबर सँ हरियर पचइ धिए गहि गदयाक । बुझाइ ए बडिआ आरौ बिसराहि भ' गेलि-ए ।

(अमर आश्चर्य ओकरा देखैत अछि आ चूड़ा धिबवैत रहैत गछि आकर माथ निहुरि जाइत छैक । रमेश गंभीर होइत फैंकित फैंकित गन कान बलक स्मृतिम पडिना रहैत जइत अछि । कहैत छैक,

रमेश-बस अमर, तौ एक मिनट ठहर । हम सुन अमर छै ।

(आ आम्हर जाइत अछि नहि ठाम पतिन बेमान रहय । अवि क' टाड भ' जइत अछि । पुढियाबल कागज पडल छैक । पकीही टा आव नहि छैक । ओ फेर निराश भ' क' शमर दिस देखैत छैक । अहि दिस सधनतः एकटा भिन्नभंगक बच्चा पकीही खा रहल छैक । दूनु हाथमे पकीही धवने ओ ओकरा धयभीत ओखिय' दवैत टाड छैक । रागे कर्तव्यक' एम्हर-आम्हर कतहु बहयबाक बल सहै

ताकि रहल अछि । स रिक देखिक' चुप चाप गबर गबर खसना जाइत अछि । ओ दरवाजा दुबधन रमेश दिम ललित रहैत अछि । रमेश भाकरा पर मोड़ मोड़ ओखि राखैत छै कि लग जाय लगैत छै कि ग्रीडा भयसँ चिचिया जका दस्त छै । रमेश स्तब्ध भ' क' गइ रहि जइत अछि । गहन आकृतिपर होमी ओ स्तब्ध आनक' छोड़िक' अश्वपन देख' लगैत छै ।)

रमेश-अरे घंटा, किए डरा गेलें ? तोरा हम थापड़सँ नहि भारीतराई एकदम नै । नै तोर हाथसँ छिन्न कांतिर्यक ई । एकदम नै रता ओ आरुहि हमरा लग ।

एहि बीच आकर बापा बहिन तेना भ' जइत छैक जेना ओहिम झरो गइल होइक । ओ नहिम वस्तु जान भरल होइक । सँ हाथमे भारी बड़ाइत होइक । ओकरा हाथक' अछि मुद्रामे रखने आत' सँ घुस' लागैत आछ । फेर घुसि' आबि अमर लगल ठह भ' जइत आछ । ओकरा चुपचाप देखैत अछि । छोड़ो सस्तरि गेल छैक)

रमेश-आहि र वा ताँ चुप चाप किए बैसन छै ? खाइ किए-ने छै ? हमरा हुनू मन्त्रक काना जरुरि नै रहैक । हमरा भुला कम्म लागै छ । ओ तँ कहैत गभक नुहा रहल, नै पतओने छलि रहल रिक गल रहल न जइ-ए । कबित'सँ ल' क' अन्न धरिमे हमरा चुते रहल न जाइ ए ।

अमर-अहाँ एखन कत' रहो भैया ?

रमेश-भाइ, पजारी' देख' नरो लने आरुहि छलि न अपन हथवगामे भरि क' हमरा ल' । (पछलगत जेना क्षण भरि चुप भ' जाइत अछि ।) हमहुँ बड़ अपात्र ववकूफ छी भाइ ! तामसमे छोड़ि देलिऐ । एहि वस्तुसँ ओ दुखा रोहो भ' गेलि । चल्लो गेलि । ओ आब एखन गेल रहो तोरा ले' शाक' । मुदा, तावत एकटा भुखल छोड़ा ओकरा खा रहल छल । (ओ फेर निश्चिन्ता भ' जाइत अछि । साविन-साविन जेना बाज' लागैत अछि) जानि नहि, हमरा देखिक' ओ बच्चा डरे जोच्छा 'क' क' उठल । (क्षण भरि चुप रहिक) यम, हमरा ताँ सत सत कह तँ हम कि एकदम जानकर जकाँ लगैत छी ? भयावह जनमरा जन्तु जकाँ लगैत छी हम ? हमरासँ ओ डेरायल किएक ?

अमर-नै भैया ! अहाँ सेकारे जिनन छी । बच्चा तँ कोना अनचिन्तासँ डेरा

जइत छैक । अहाँ तँ सुन्नर छी । सभकेँ अपन सम्बन्धी लगना जोग । रमेश जेना थाकल-ठहिरायल जकाँ बसि जाइत अछि । अमरक' देखैत कहैत छैक)

रमेश-नोग चन गलि एखन तँ गलि अछि । उच्यु ताँ नै देखना हाववहक । नै ?

अमर-गहि हम नहि हुनका देखल रहि । किएक छुँ गलीह ओ ? ओ अचक' गनह करैत छथि न

रमेश-ओ क'जना नहि चुतेत छैक विशुद्ध संसारी व्यवहार बुझैत अछि । नै चल गलि बस, जाब रह्यो । (एक क्षण चुप्पी) जे क'जनासँ नहि हाँक मन्त्रक तकल हुनु सभ प्रथम अर्थ छैक । यद्यपि हम ओकर बड़ कृतज्ञ छिएक, किएक तँ ओ हमरा तथार्थ प्रेम करैत अछि । (अमरक आकृति विचित्र असमजसम बुझाइत छैक स्वीकार-अस्वीकारक भावसँ भरल लगैत छैक । ओ पुन स्म अछि ।) ताखन एकारक जेना रमेशक शरीरपर सभ किछ कत झाड़ि झाड़ैत छैक, ओ खूब प्रफुल्लित स्वप्न बात लगैत अछि ।

रमेश-बैस बाड सून । जाय दहोक । जेतेन अछि नै एकटा महान कथित जकाँ अछि । संसारक सम्पूर्ण व्यापार, कार्य कलाप सम्बन्ध विच्छेद एकराम उठैत छैक बुलबुल्ला । की ? (किछ तस्मिन् जकाँ) भुदा ताँ हाँ कह पजारी' नाह खयाल नै कोना अपमान नहि भयक । भ'न म यदि भौजी म मानि लअथ तँ ओ हमरा गलत बुझैत । (फेर आशिक चुप्पी) बड़ झलरि छैक । एत कत क'जना दृष्टि नहि करैत छैक । सभ अपन ओखक रंग फिरे क' दैत छैक एक दोसरपर । को एहि कतक' मान' ले' भैया न अछि जे हमरालोकनिक तत्त्वोपक जइ एकर थिक जाय रह्यो

अमर-अहाँ हमरा सङे कत आर नुहा खाइ भैया । (उ.उ.उ.पर रमेश बैसि जाइत छैक)

रमेश-ले' कैकैत छी । पेट खराब लागत तखन ? (रमेशक कहवाक दुगपर अपन किञ्चित हँसैत अछि एक क्षण बाद कह्यो अछि) यम अमर हम बिनु पुछा तह्य झपाक वस्तु वहाग क' दसि दाखि ललित्यो । ई खराब बात थिक नै ? गौधोली कहने छथि जे बिनु पुछा ककरा वस्तु नहि छुवाक चाही



२१२







बहार क' क' क्रमशः कागजसभ देने चल जा रहल छैक । एही चेष्टामे ओ किछु लाकियो रहल अछि, जकरा ओ 'डाह' नहि चहैत अछि । तखने ओ एकटा डाइरीकेँ खूब सावधानीसँ उठा लेत अछि । फेर एकटा लाल चूड़ी उठवैत अछि, जकरा ओ 'डाह' नहि चहैत अछि । तखने ओ एकटा डाइरीकेँ खूब सावधानीसँ उठा लेत अछि । फेर एकटा लाल चूड़ी उठवैत अछि । फेर दु-हीनटा लिफाफा निकालि निकालि क' रखैत अछि जाहि कागजपर यत्नपूर्वक खूब अक्षर बना-बनाक' लिखल पता-ठेकान छैक आ कात-करेटमे फूल-पतक चित्र । लत्ती-फत्ती बनाओल । ओहि सभकेँ ओ खूब नोक-झोंक' रख' लगैत अछि । रमेश देखि रहल छैक । ओकर आँखमे मात्सर्य छैक । फेर ओकर आँखमे क्रोध भरि जाइत छैक । ओकर आकृति तमसा जाइत छैक । हुनू गेटेक मध्य जैत कागजक आगिसँ दुनू आकृति सात-सात बुझाइ पड़ैत छैक । ओँच उठिये रहल छै । सभ कागज जरि गेलाक बाद पुछैत छै रमेश ओकरसँ )

रमेश-ई को छौक ?

युवक-बुड़ीक फान । (ओकर स्वर लाजेँ सहमल आ निराशासँ टूटल-सन छैक)

रमेश-(व्यांग्यसँ, किंचित हँसैत । परंच जेना ओकरा नहि कहिक' स्वगत बानि रहल हो ) अज्ञानी, जीवनकी तारा छोड़ि देतौक ?

(रमेश डेरदल जकाँ चुप भ' जाइत अछि । फेर जेना जागि उठय)

रमेश-ककर चिट्ठीसभ छौक ई ?

युवक-(नाथ निहूँतक' चुप भेल रहैत अछि)

रमेश-ककर चिट्ठी धिकौक ?

युवक-(चुप)

रमेश-(क्रूरतासँ) द' दहो एही आगिमे एकरेसभकेँ । एहि आगिमे ई चूड़ी । (फेर युवककेँ देखैत) आ ओ को छौक ? (झगटि लेत छैक ओकर डाइरी । युवक बचड़ा जाइत अछि । रमेश फरा उठवैत छैक । युवक चिन्तित आ आशङ्कित अछि जे कतहु एकारो नै हाहि देहय ई ? मुदा रमेश एक एक टा कोनो पृष्ठपर पढ़' लागल अछि)

"जाहि अरिपनकेँ खण्ड-खण्ड क' क'

जा रहल छी हम,

से बड़ पुरान आइगमे देल गेल छल ।

से हमर माँ, हमर भूख आ हमर

पोलायम कविता छिक ।

वेसोकाल अन्तर्हीनता आ सुरक्षामे पोसल गेल अछि ।

तैं अहाँक नाम बदलै छी मित्र ।

हम अपन नाम-सम्बन्धक अस्तित्व काटिक'

जाहि घाटपर चल' जा रहल छी-ओत'

किछु आने जैत अछि धड़-धड़ । एति दिन अभावक

रूप अगियासो, चिनगी सभ ।

ओत' नगीना कदल चमचम धारीमे

मोलायम फुलको सेटी नहि संयमल करैत अछि ।

से सभ हम जनेत छी

तैं अरिपन खण्ड-खण्ड करैत छी

आव अपने मनक आकाश

बुट्टी-बुट्टी काटिक' धँटैत छी ।

पसारि देत छी अहूसँ फराको अपन पिपा

आव हमरासभ अरिपनमे नै

अपन स्पंदनमे सम्मिलित होयब ।

संभव हमरासभ-सन

बहुत राम, बहुत अपन दोस्त होयत ।

तैं अहाँक शब्द 'सह-अस्तित्वक बोध'

आरो आवुदास सड़ अहाँकेँ आपस ।

आव हमरा कोनो फूल नहि चाही

कोनो वैचकितिक संज्ञाक कृपाक

आव हमरा सम्पूर्ण पलाश-वन चाही

ओही पलाशक वन ले' हमर ई पयर

अरिपनकेँ धँडैत चल जा रहल अछि ।

अगहन बड़ पुरान, रोगाह आ जर्जर-पुरान भ' गेल छल ।

अहाँक जगलाक बाद जे किछु होयत नव,



तैह अहाँक—हमसलोकनिक सभक होखत ।

(रमेश बमकैत आँखिसँ देखैत छैक । अपन आकृतिपरसँ जेना सभटा चिन्ता किछु सेकेंपड़क हेतु भौंटा गेलैक अछि । अपन कविताकेँ रमेशक मुँहसँ पड़ल जाइत मुनिक जेना स्वयं मनमे नव अर्धक बोध होव' लगैक । ओ मुँह भ' क' देखैत रहैत अछि । आँच एखनो उठि रहल छैक । रमेश डायरीक एक-दूटा पान आर उनदभैत छैक तथा पढ़' चाहैत छैक । फेर अकस्मात् जेना 'चेन्निक' अपनेपर तापस करैत बाजि उठैत अछि ।)

रमेश—नहि, हमहुँ भरिसक कविताक मोहमे सकपंज भेल जा रहल छी । एकरो एहीमे डाहि देब' पड़त । जरा दे । नहि पढ़ब अर्ग ।

(डाइरीकेँ खूब आक्रोशक मुद्रामे फाटक द' वज्र करैत अछि ओ । आ बिना कोनो तारतम्यक रमेश डायरीकेँ आगिमे देब' चाहैत छैक । युवक शीघ्रतामे चिचिआव लगैत अछि आ ओकर हाथसँ डाइरी छीन' चाहैत अछि । रमेशसँ बेस झिक्कतीरो होव' लगैत छैक । परंच अन्तमे युवक छीन' लैत छैक । आ फुत्तीसँ उठि जाइत अछि । तुरन्त साहसपूर्वक ओकरा हथियाक' सम्हरैत अछि आ लंक लागिक' पड़ाव लगैत अछि ।)

रमेश—नहि, हमहुँ भरिसक कविताक मोहमे सकपंज भेल जा रहल छी । एकरो एहीमे डाहि देब' पड़त । जरा दे । नहि पढ़ब अर्ग ।

(डाइरीकेँ खूब आक्रोशक मुद्रामे फाटक द' वज्र करैत अछि ओ । आ बिना कोनो तारतम्यक रमेश डायरीकेँ आगिमे देब' चाहैत छैक । युवक शीघ्रतामे चिचिआव लगैत अछि आ ओकर हाथसँ डाइरी छीन' चाहैत अछि । रमेशसँ बेस झिक्कतीरो होव' लगैत छैक । तुरन्त साहसपूर्वक ओकरा हथियाक' सम्हरैत अछि आ लंक लागिक' पड़ाव लगैत अछि ।)

(एक क्षणक लेल रमेश उत्तेजनामे ओकरा दिस देखैत रहैत अछि । फेर खुब तेजीसँ ओकरा दिस दू-चारि डेग दौड़ैत अछि । फेरों ठहरि क' किछु सोच' लगैत अछि । अच ओ पराजित जकाँ विचार-मग्न भ' क' टाढ़ रहैत अछि आ कोनो चेष्टा करबाक लेल हाथमे जेँकि संचार करैत अछि कि ओकर वाम हाथ बाँझसँ लादल अनुभव होब' लगैत छैक । ओ जेना एक्के टाम टाड़ भेल बहुत बेसी चंचल भ' जाइत

अछि । ओकरा अपन हाथमे लटकल झोय मन पाई जाइत छैक । तखन तत्काल जेना किछु सोचैत ओहि युवककेँ मन पाईत ओतहिम गहक कर' लगैत छैक ।)

रमेश—री भाइ, री ठहरि जाँ री । रे तँ कय सँझसँ खयनो नहि छलें—रे । थमिह जो रे भाइ । थमिह जो' । तँ वड़ दुव्वर लगैत छलें...धुरि ताक तँ रे...

(रमेश सेहो ओकर पाछाँ पाछाँ खूब तेजीसँ जकाँ वड़' लगैत छैक । ओ बड़ी दूर आ बहुत काल धरि दौड़ल अछि से प्रभाव दर्शककेँ देखाइ पड़ैत छैक—गम्य होइत छैक जखन कि एकासँ बेसी बेर रमेश दौड़िक' मंचसँ बाहर जाक' पुनः बिंगसँ हकमैत आ व्यकुल पुनः मंचपर प्रवेश करैत छैक आ पुनः मंचसँ दौड़िक' चल जाइत छैक । एहि क्रममे एक बेर नेपथ्यमे रहि जाइत छैक ओ । मंचपर सम्पूर्ण सूर्योदयसँ पूर्वक दृश्य व्याप्त अछि । ई दृश्य दू प्रकारेँ बदलल जा सकैत अछि । एक तँ परदा खसक' किछु मिनेटक अंतरालक बाद अथवा प्रकाश-संयोजनाक किछु प्रयोगसँ ।)

रमेश युवकक पाछाँ-पाछाँ दौड़ैत रहबाक क्रियामे अपन हाथमे लटकल झोरीसँ चिचाइत-चिचाइत सिधिल भ' क' दौड़' लगैत अछि जे कि दृश्य नहि छैक । रमेशक एहि चेष्टा एवं शारीरिक मानसिक दशाक अभिव्यञ्जना अगिला दृश्यमे होइत छैक ।)

(ई दृश्य आरम्भ होइत छैक एकटा आभिजात्यसँ भरल पुलत अर्थात् विलासपूर्ण वातावरणसँ जगजियार उच्चवर्गीय ड्राइंग-रूममे ।)

#### चतुर्थ दृश्य

(अति समृद्ध प्रकारक लोकक सजल-सजाओल बैसक । किछु गोटे वेशभूषासँ परम संतुष्ट आ संप्रान्त बैसल छथि । ताश भ' रहल छैक । किछु गीत बाजि रहल छैक मन्द-मन्द स्वरमे । जोठलीमे अपेक्षित प्रकाश छैक, किछु रहल प्रकाश । सभ ध्यानभग्न तारामे लागल । कंबाड़पर धपकोक आवाज होइत छैक मुदा मुक्काक । तखने रमेश हकमैत हकमैत बेचैन जकाँ अर्पैत छैक । ओ चामे-पसेने तरवार अछि । ओ ततेक हकमि रहल अछि जे गीत जकाँ टाड़ो नहि भ' पायि रहल अछि—डगगडाइत अछि । ओकर एहि अप्रत्याशित आ अवीक्षित उपस्थितिसँ सभकेँ जेना आशंकासँ चकविदार लागि जाइत । दू गोटे



तैं हड़यडाक' डेरायल ठाँक' ठाँक भ' जाइत छैक । ओकरसभक ओखि ठनट'-ठनट' पर लागि रहल छैक डेरें । सभ क्यो कोनोनाक' साहस कर' चाहैत अछि । मुदा एक दोसर दिम ताकि क' मुँह बन्दैत अछि । सभक कंठ जेना मोका रहल होइक सँ भाव छैक सभक मुखकृतिपर । कोनोना क' साहस करैत एक गोटे दोतराइत पुछैत छैक ।)

पहिल-कके-कके छ' तो' ?

दोसर-बदमाश अछि ई ।

तेसर-अ-अ हाँ है'.....ए-एकर तला-तलाशो लिय' । (ओ व्यक्ति दूरसँ अपन बड़ादुरी देखबैत अछि आ धर-धर कपैत रहैत अछि । रमेश किछु कम, मुदा हकमिने रहैत अछि)

तेसर-दे-देखियो ओ, डाँड-त'इमे कतहू छूरा कि पिस्तौल तैं ने छै ओ ? (रमेश हकमि रहल अछि लगातार । थकनीसँ जेना ओकर ओखि झोपाय लगैत छैक क्रमशः से नजरिमे अविते पड़िल लोक भीतरसँ डेरायल रहितो जेना रोआवसँ कह' लागैत छैक)

पहिल-ध-भागड़ । भागै छह कि नै ? (रमेश सावधान भ' क' ओकरापर एक बेर ओखि दैत छैक)

रमेश-कतोक भागू ? कहाँ धरि भागू ? (एकाएक खूब कड़किक' कहैत छैक। तेना कहैत छैक जे सभ हताप्रभ भ' जाइत छैक । ओकरालोकनिक आधा-आधा ओखि एकरा दिस टडावल रहि जाइत छैक)

रमेश-हम तैं पड़ाइते आवि रहल छी । आ ही भाई, एतहु तैं भगिते-भगिते आयल छी । हँफयैत मुदा सुभ्यस्त स्वरमे) अहाँ नहि जनैत छी, हम कत' सँ पड़ाइत आवि रहल छी, कहियामे पड़ाइत आवि रहल छी ? अहाँलोकनिमेसँ क्यो नहि जनैत छी । कहू तैं, जनैत छी ? (एहि पूछवापर सभ एक दोसराक मुँह तर्कैत रहैत अछि बेवकूफ जकाँ । तखन एकटा साहस क' क' कहै छैक)

पहिल-नहि जनैत छी । तो-तोरा तैंसँ मतलब ? हमरासभ किऐ जानू जे तां किऐ पड़ाइ छह ? हूँ ठ, बहुत लोक पड़ाइत छैक ।

रमेश-हँ बहुत लोक पड़ाइत रहैत छैक, सैह तैं कहि रहल छी । बहुत लोक पड़ा रहल-ए । सड़कपर जाक' देखियो । आउ । आउ हमरा संग । (ओ बहिक' एक गोटेक बाँहि धरैत छैक । आ घोंचैत छैक । ओ

व्यक्ति अपन बाँहि छोड़व' चाहैत अछि । रमेश ओकरा अपना दिस घोंचैत छैक)

लोक-छो-छोड़इ हमरा । तो-तोरा जेल जाय पड़तह । जेल । बुझलइ ?  
रमेश-जे-ए-एल । धुनू ! जेलक बाहरो तैं जेले छैक । अपितु, आरो भयावह आ नहि सहि सकय योग्य यंत्रणा देव' वाला जेल ! (चुप्प, फेर जेना अकस्मात् मन पड़ि जा इक) ई हमर झोरी देखि रहल छी अहाँ ? हमर हाथमे लटकल ई झोरी ?

क्यो एक गोटे-(तमसाइत, दौत कोचैत) नरकमे जाओ तोहर झोरी । गुग्गु ! तो' तो' एखने भागि जे एत'सँ । हम दरवानकें बजबैत छिएक । एखने भगौतीक तोर । बदमाश ! बुझाइ-ए बुझाइ-ए जेना जेलसँ पड़ावल कोनो खुनी होअय ! (क्रम छैक डेरयल)

रमेश-खुनी छी नहि । मुदा, तो' जनैत छह ? आब तोरा चिचिअवलासँ किछु हायतह-जयतह नै । किछु नहि । (झोरी देखबैत) ई झोरी भरबेक चाहो । (सोचमे पड़ैत जेना) हमर बच्चासभ दतमनि क' क' बैसल होयत । ओकरासभकें खाय ले' रोटी नहि छै घरमे । तोर ओत' बहुत रास छह-कोनो कमी नहि छह । तो' तैं रोटीक जुआ खोलइत रहैत छह । हारैत छह, जीतैत छह । बाजSSह !

एक गोटे-ने-क्यो अछि ? कने जल्दी अबै तैं एम्हर ।

रमेश-(खुँखार जकाँ गरजैत) चुप रह । चुप । हमरा लग किछु नहि अछि । नै रिक्कल्वर, नै छूरा । (हरबैत देखैत) मुदा तोरालोकनिकें हमरासँ डर कर' पड़तह । हम तोहर खून क' सकैत छियह । किछु आर निर्णायक घोषणा जकाँ करैत) हमरा एखने रोटी आ कवितक दूरी तय क' लेबाक अछि एही क्षण । एहो ऐतिहासिक क्षणमे हमरा अपन स्त्री आ बच्चा सभ ले' किछु क' लेबाक अछि । फूती करह । ई झोरी छह । तोहर लोक तोर शराब पोबिक' धुत निश्चिन्त सुतल छह । तो' जुआमे व्यस्त छह । ई झोरी सैह, एकरा भरह । हमर बच्चासभ रातियो किछु ने खायलक ।

एक गोटे-तो'.....हम.....रा धमका रहल छह ? हमरा तो'....

रमेश-(एकटा सहजोर, माथा झुन क' देव' बला थापड़ मारैत छैक ओकरा) नै, सत्ये कहैत छियह । ई झोरी अछि हमर । खाली अछि । तो' सभ यदि सोचैत छह जे हम भीख माङ' लागव ऐ झोरो ल' क', तैं से



मनसँ निकालि लैह भ्रम । शरीरमे एक्का खुन्न लागति रहवा धरि, हमरा भिखमंगा बना देबाक तोरासभक ई व्यापक पहयंत्र सफल नहि होब' देबह । तोरासँ ल' लेबह । (ओ हाथक झोरी देखबैत छैक । सभ डोरायल-डोरायल ओकरा देखैत छैक आ 'कौ करो को नै करो' क असमंजसमे थरथराइत छैह अछि)

रमेश-देरी नहि करह । भूखकेँ सहल नहि होयत । जल्दीऽऽऽ । (ओ सभ एकरा कहवापर 'डोराक' एम्हर-ओम्हर बडैत अछि, मुदा निर्णय नहि क' पवैत अछि जे कौ करौ । सभ अपन-अपन जेबो हथौडैत अछि । मुदा, बहुत पाइ ने भेटैत छैक । ओ सभ व्यस्त अछि ।

रमेश-ई झोरी भरतैक-अन्नसँ अथवा द्रव्यसँ । एक्को बात छैक । भरक छैक झोरी । (ओकर एना भ' क' कहवापर ओ सभ गोटे विचित्र बबरातति आ भयसँ फेरो हथौडिया देब' लगैत अछि । ओहिमेसँ एक जन बडबडाइत छैक )

एक गोटे-कहू तँ ! एत' गहूँ कत' सँ ओतैक ! ई कोनो बात भेलै । एहि डाइंग-रुग्मे गहूँ कत' सँ ओतै हो ? किचि बात.....

रमेश-जुआमे जीवल-हारल रुपैया ताहीसँ भर' । भरि दे ओहीसँ । हमर पूरा परिवार गतिबैसँ खेनाइ नहि खयलक अछि । नैना सभ दाजनि क' क' मुँह ताकि रहल होयत..... ओह ! (फेर खूब क्रुद्ध होइत) कहैत छियह, भूखकेँ सहल नै जाइत छैक.....(ओ किछु तेहन आनय ओखिये देखैत छनि जे सभ आगे डेर जाइत छैक । एहि बेर एकर हाथसँ ओ सभ सतेक प्रसा भ' जाइत अछि जे करोब-करोब छहोमे हिलिये रहल अछि । फेर कोनोना क' दाबपर लगओल रुपैयासभ ओकरा झोरीमे खसब' लगैत छैक । और विकराल हँसो हँसैत अछि।)

रमेश-आइ हमर रोटी आ कपिताक दूरो तय करवाक अछि भाइसभ ! कतेक पैघ दूरी होइत छैक, तोरासभकेँ नै पता । ककरो नहि । (किछु चुप्पी) भरिसक तोरासभकेँमेसँ बेसी गोटे रोटीकेँ नहि जनैत छह, नै कविताकेँ । (झोरी देखबैत) एहि लटकल झोरीकेँ देखैत छहक ?

एकगोटे-भेलह, भेलह.....ल' जा । भाग' एत' सँ । भा.....ग..... ।  
[बिचमे रमेश खूब दमगर चमेटा ओकरा मुँहपर मारैत डटैत छैक ओकरा]

रमेश-निलज्ज ! तौ कि हमस दान द' रहल छँ-खरात ? (स्वाभिमानसँ) हम तोरासँ छीनिक' ल' जा रहल छियौक । तौ हमरा रोकि नै सकैत छँ अक्रमण करवाक सभटा सरंजाम रहितौ-तौ हमरा रोकि नै सकैत छँ तौ आव ककरो रोकि नै सकैत छहौ । बुझलै ।

[ओकर मुखकृतिपर मात्र क्रोध छैक ! भयानक क्रोधसँ । भरल ओकर निर्णय लाल प्रकाशक अपेक्षित संयोजनसँ जनाओल जयतैक । ओ सभ पाथरक मुहलत जहाँ टाढ़ रहत-निग्रान भेल । तेहन मुहलत जहाँ जाहिपर मोट कजरी लगल छैक । प्रकाशसँ से प्रभव उत्पन्न होयतैक । रमेश पूरा मंचपर 'आतंक' जहाँ पसारि क' चल जाइत छैक । मंचपर दिनक प्रकाश पसारि जाइत छैक ।]

□